# CS (MAIN) Exam : 2017

**STH–C–MTLI**

## मैथिली
## (अनिवार्य)

समय : 3 घंटा

पूर्णांक : 300

### प्रश्नपत्र विषयक विशेष निर्देश

**प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व देल गेल निर्देशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ू**

सभ प्रश्न अनिवार्य अछि।

प्रत्येक प्रश्न/भागक अंक ओकरा सामने अंकित अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखू, जाधरि कि प्रश्नमे कोनो दोसर निर्देश नहि हो।

प्रश्नमे शब्दक संख्याक ध्यान राखू, अधिक वा कम शब्दमे उत्तर लिखला पर अंक काटल जा सकैत अछि।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिकामे रिक्त छोड़ल स्थानकेँ स्पष्ट रूपसँ अवश्य काटि दी।

## MAITHILI
## ( Compulsory )

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 300

### QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

**Please read each of the following instructions carefully before attempting questions**

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

**1.** निम्नलिखित कोनो **एक** विषय पर *600* शब्दमे निबन्ध लिखू : 100

*(a)* तकनीकक अत्यधिक प्रयोगसँ उत्पन्न खतरा

*(b)* धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्रक शक्ति अछि

*(c)* नोटबन्दीसँ भारतीय अर्थव्यवस्थाकेँ दीर्घअवधिमे होबयबला लाभ

*(d)* आयुर्वेद-पद्धतिक प्रति पाश्चात्य देशक आकर्षण

**2.** निम्नलिखित गद्यांशकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओकर अन्तमे देल गेल प्रश्नक सटीक एवं स्पष्ट उत्तर अपना शब्दमे लिखू : 12×5=60

मस्तिष्कक सर्वोत्तम भोजन पुस्तक अछि। एक चिन्तकक कहब अछि जे मानवजाति जे किछु सोचलक अछि, कयलक अछि आओर प्राप्त कयलक अछि, ओ पुस्तकमे सुरक्षित अछि। मानव-सभ्यता एवं संस्कृतिक विकासक सम्पूर्ण श्रेय पुस्तककेँ छैक। पुस्तकक महत्त्व आ मूल्य बेजोड़ अछि। पुस्तक अन्तःकरणकेँ दीप्तिमान करैत अछि। नीक पुस्तक मनुष्यकेँ पशुत्वसँ देवत्वक दिशि अग्रसर करैत अछि, ओकर सात्विक वृत्तिकेँ जगाकय पथच्युत होयबासँ वंचित करैत अछि आओर मनुष्य, समाज एवं राष्ट्रकेँ मार्गदर्शन करैत अछि। पुस्तकक हमरा मोन आ मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पड़ैत छैक एवं ओ प्रेरणादायक होइत अछि।

पुस्तक मनोरंजनक क्षेत्रमे सेहो मानवक सेवा करैत अछि। एतय मनोरंजनक अभिप्राय कोनो हास-विलाससँ नहि अछि अपितु मनोरंजनक अर्थ व्यापक अछि। जे पुस्तक पाठककेँ मोहि लैत अछि आ ओकर मोनकेँ रमा दैत अछि ओ यथार्थ अर्थमे मनोरंजक पुस्तक अछि। जे पुस्तक पाठककेँ जतेक दूर धरि ल' जाइत अछि ओ ओतबे आह्लादकारी होइत अछि। ओना हलुको-फलुको साहित्यक महत्त्व कम नहि अछि। एहन साहित्य मनुष्यक तनावकेँ बहुत अंशमे कम क' दैत अछि एवं ओकर उदास मोनकेँ प्रफुल्लित क' दैत अछि।

नीक पुस्तक मनुष्यजातिकेँ ज्ञान आओर मनोरंजन प्रदान करैत अछि। विज्ञान, वाणिज्य एवं कानूनक पुस्तक मानवक ज्ञानकेँ वृद्धि करैत अछि। एकरा पढ़िकय मनुष्य अपना भीतरमे आन्तरिक शक्तिक अनुभव करैत अछि। सत्य बात तँ ई छैक जे पुस्तक हमर यथार्थ मार्गदर्शक अछि। ओ हमरा नव-नव क्षेत्रसभक आ गूढ़ रहस्यक तँ ज्ञान करबितहिं अछि संगहि चिन्तन आओर मननक लेल सेहो बाध्य करैत अछि। पुस्तक मनुष्यक असमंजसकेँ समाप्त कय दृढ़ संकल्प जगबैत अछि। गाँधीजी 'गीता'केँ मायकेर संज्ञा दैत छलाह कारण ओ हुनका प्रत्येक कठिन परिस्थितिमे मार्गदर्शन करैत छल। पुस्तक एहन मार्गदर्शक अछि जे नेतँ दंड दैत अछि, ने तमसाइत अछि आ ने बदलामे किछु मँगैत अछि मुदा संगहि अपन अमृत-तत्त्वक वितरण करबामे कोनो कंजूसी नहि करैत अछि।

पुस्तक मनुष्यकेँ यथार्थ सुख आ विश्रान्ति प्रदान करैत अछि। पुस्तक-प्रेमी सबसँ अधिक सुखी होइत अछि। ओ जीवनमे कखनो रिक्तताक अनुभव नहि करैत अछि। पुस्तक पर पूरा भरोस राखल जा सकैत अछि।

विचारक संग्राममे पुस्तके अस्त्र होइत अछि। पुस्तकमे सन्निहित विचार सम्पूर्ण समाजकें बदलि देबामे समर्थ होइछ। आइ-काल्हुक संसार विचारेक संसार अछि। समाजमे जखन कोनो परिवर्त्तन अबैत छैक अथवा क्रान्ति होइत छैक, ओकर जड़िमे कोनो ने कोनो विचारधारा होइत छैक। श्रेष्ठ पुस्तक समाजमे नवचेतनाक संचार करैत अछि आ समाजमे जन-जागरण अनबामे अपन महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। पुस्तक पढ़लासँ मनुष्यक दृष्टिकोण व्यापक भ' जाइत अछि एवं ओकरामे उदात्त-भावना आबि जाइत छैक।

पुस्तक एहन अमरनिधि अछि जे पछिला पीढ़ीक अनुभवकें अविकल रूपमे अगिला पीढ़ी तक पहुँचा दैत अछि। एहिमे सन्निहित ज्ञानकें केओ विनष्ट नहि कय सकैछ। संक्षेपमे पुस्तकक महत्त्व अतुलनीय अछि।

*(a)* पुस्तककें बेजोड़ किएक मानल गेल अछि?

*(b)* एहि कथनसँ लेखकक की अभिप्राय अछि जे 'मनोरंजनक अर्थ व्यापक अछि'?

*(c)* पुस्तक हमर यथार्थ मार्गदर्शक किएक अछि?

*(d)* गाँधीजी 'गीता'कें मायकेर संज्ञा किएक दैत छलाह?

*(e)* पुस्तक समाजमे नवचेतनाक संचार कोना करैत अछि?

**3.** निम्नलिखित अनुच्छेदक सारांश लगभग एक-तेहाइ शब्दमे लिखू। एकर शीर्षकक उल्लेख करब आवश्यक नहि अछि। सारांश अपनहि शब्दमे लिखू : 60

श्रम संसारमे सफलता प्राप्त करबाक महत्त्वपूर्ण साधन अछि। श्रमे कयलासँ हम अपन आकांक्षासभकें पूर्ण कय सकैत छी। संसार कर्मक्षेत्र अछि अतएव कर्म कयनाइ सयह हमरासभक धर्म अछि। कोनो कार्यमे हमरा तखने सफलता भेटि सकैत अछि जखन हम परिश्रम करी।

श्रम सयह जीवनकें गति प्रदान करैत अछि। यदि हम श्रमक उपेक्षा करैत छी तँ हमर जीवनक गति रुकि जाइत अछि। अकर्मण्यता हमरा एना गछारि लैत अछि जे ओकर फन्दसँ निकलनाइ कठिन भ' जाइत अछि जखन परिश्रमी व्यक्ति सभ प्रकारक कठिनताक सामना कय आगाँ बढ़ैछ तँ चतुर्दिक् सफलता प्राप्त करैत अछि। ओ भाग्यक आश्रय नहि लैत अछि अपितु निरन्तर पुरुषार्थ करैत अछि। प्रयास कयलो पर यदि परिश्रमी व्यक्तिकें सफलता नहि भेटैत छैक तँ ओ निराश नहि होइत अछि। ओ ई जनबाक हेतु सचेष्ट रहैत अछि जे कार्यमे सफलता किएक नहि भेटल अर्थात् ओ अपन त्रुटिक मार्जन करैत अछि जाहिसँ सफलता ओकरा आलिंगन कय सकैक।

एहि संसारमे हमरा डेग-डेग पर संघर्ष कय अपन मार्ग स्वयं प्रशस्त करय पड़ैत अछि। हम कतबो शक्तिशाली आ साधन-सम्पन्न किएक ने होइ यदि परिश्रम करबासँ देहकें चोरबैत छी तँ मात्र साधन-सम्पन्नता हमरा लक्ष्य-प्राप्तिक दिशामे नहि ल' जा सकैत अछि। संसारमे जतेक महापुरुष भेलाह अछि हुनक आशातीत सफलताक जड़िमे श्रम आ शक्तिक बड़ योगदान रहल अछि।

हमर समाजमे बहुत लोक नियतिवादी अथवा भाग्यवादी छथि। एहन लोक समाजक प्रगतिमे बाधक छथि। आइ तक कोनो भाग्यवादी संसारमे कोनो महान् कार्य नहि कयलनि। बड़का-बड़का खोज, आविष्कार एवं निर्माण परिश्रमे द्वारा संभव भ' सकल अछि। हमर साधन आ प्रतिभा हमरा केवल प्रेरित करैत अछि, हमरा पथ-प्रदर्शन करैत अछि मुदा लक्ष्य तक हम मात्र श्रमक माध्यमेसँ पहुँचैत छी।

श्रम कयलासँ यश आ वैभव दुनूक प्राप्ति होइत अछि। जखन हम अपन कर्त्तव्यक पालन करबाक हेतु श्रम करैत छी तँ हमरा मोनकेँ एक अद्भुत आनन्द भेटैत छैक। अन्तःकरणक सम्पूर्ण पाप धोआ जाइत छैक आ संतोषक अनुभव होइत छैक। परिश्रमी व्यक्तिक लेल कोनो कर्मकांड महत्त्वपूर्ण नहि, अपन कर्त्तव्यपथ पर चलैत रहब सयह ओकर साधना अछि। जखन कोनो कृषक दिनभरि तिक्ख रौदमे अपन खेतमे परिश्रम करैत अछि आ संध्याकाल अपन खोपड़ीमे आनन्दमग्न भ' क' लोकगीत गबैत अछि, तँ ओहि समयमे ओकर स्वर-वितानमे दिव्य संगीतक सृष्टि होइत अछि।

शारीरिक श्रमसँ मनुष्यकेँ संतोष तँ भेंटितहिं छैक, ओकर शरीर सेहो स्वस्थ रहैत छैक। आइ-काल्हि शारीरिक श्रमक अभावक कारणेसँ मनुष्य नाना प्रकारक व्याधिसँ ग्रस्त भेल अछि। शारीरिक श्रम प्रत्येक व्यक्तिक लेल आवश्यक अछि। कहबाक आवश्यकता नहि जे शारीरिक श्रम करयबला लोक दीर्घजीवी होइत छथि। ई कहलो जाइत छैक जे स्वस्थ शरीरमे स्वस्थ मस्तिष्कक वास रहैत छैक। ओ गंभीरातिगंभीर तथ्य सेहो सहजरूपमे ग्रहण कय लैत अछि। विषम परिस्थितिमे सेहो ओ विचलित नहि होइत अछि अपितु साहससँ ओकर सामना करैत अछि। ओ प्रत्येक समस्याक समाधान ताकि लैत अछि। मानसिक श्रमक महत्त्वकेँ बुझिये कय हमरालोकनिक ऋषि चिन्तनमे लीन रहैत छलाह एवं लोककल्याणकेँ दृष्टिमे राखि विचारशील रहैत छलाह।

श्रमक एक विशेष अर्थ सेहो छैक, एहि अर्थमे श्रम उत्पादक सेहो अछि अनुत्पादक सेहो। कृषक परिश्रमसँ खेती करैत अछि, ई उत्पादक श्रमक श्रेणीमे आयत। खेल खेलयबामे अथवा व्यायाम करबामे जे परिश्रम होइत छैक ओ अनुत्पादक श्रम कहल जायत। एहि श्रमक सेहो अपन महत्त्व छैक। गाँधीजीक कहब रहनि जे जखन श्रमे करबाक अछि तखन उत्पादक श्रम सयह किएक नहि कयल जाय। ओना गाँधीजी सभ प्रकारक श्रममे आनन्दक अनुभव करैत छलाह।

जाहि राष्ट्रक लोक परिश्रमी होइत अछि ओएह देश उन्नति करैत अछि। जापान आओर जर्मनीतँ विश्वयुद्धक विभीषिकाक असह्य कष्ट कटलाक बादो अपन पुनः निर्माण जे कय लेलक, एकर कारण ओहि ठामक लोकक परिश्रमे छैक।

निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे श्रम सयह जीवनक सुख अछि एवं सृजनक मूलमंत्र सेहो अछि।

**4.** निम्नलिखित मैथिली गद्यांशक अंग्रेजीमे अनुवाद करू : 20

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन सन् 1919 ई० मे इलाहाबाद नगरपालिकाक अध्यक्षक कार्यभार ग्रहण कयलनि। ई हुनका लेल कठिन परीक्षा छल कारण ओ नगरपालिकाक अध्यक्ष तँ छलाह मुदा अंग्रेजक एहन प्रभाव आ रोब छलैक जे सामान्य भारतीय हेतु ओहि मध्य काज करब दुरुह छलैक। कार्यभार ग्रहण करितहिं टंडनजी देखलनि जे छावनीक फौजीलोकनि पानिक उपयोग करैत छथि मुदा कर नहि दैत छथि। ओ छावनीक फौजीलोकनिकेँ ई सूचना प्रेषित कयलनि यदि एक मासक भीतर कर नहि जमा कयल गेल तँ पानिक आपूर्त्ति बन्द क' देल जायत।

एहि सूचनासँ फौजी छावनी, सम्पूर्ण शहर आ नगरपालिकाक कार्यालयमे हहारो मचि गेलैक। स्थानीय अखबारबला सभ एहि आदेशकेँ प्रमुखताक संग छपलक। छावनीक पानिक आपूर्त्तिक बन्द करबाक अन्तिम दिन कतिपय फौजी अधिकारीलोकनि नगरपालिकाक कार्यालयमे पहुँचलाह आ ओहिमेसँ वरिष्ठ अधिकारी टंडनजीकेँ कहलकनि जे अहाँ छावनीक जलापूर्त्ति बन्द नहि कय सकैत छी। टंडनजी शांत भावसँ कहलथिन यदि आइ कर जमा नहि कयल गेल तँ काल्हि पानिक कनेक्सन काटि देल जायत।

अधिकारी क्रोधावेशमे हल्ला-गुल्ला कयलनि मुदा टंडनजी लेल धनसन। अन्ततः सभ फौजी अधिकारी ओतयसँ चल गेलाह। कार्यालयमे सनसनी पसरि गेल। टंडनजीक धीरता आ दृढ़ता देखि सभ अचम्भित छलाह।

दोसरे दिन छावनीक अंग्रेज अधिकारी कर जमा कय देलनि।

**5.** निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांशक अनुवाद मैथिलीमे करू : 20

In ancient times in most civilized countries, for example in Egypt, Iraq, India, China and in the Roman Empire, many great irrigation works were constructed. In very hot countries, water is even carried in underground channels to prevent it from being evaporated by the sun's heat. In modern times, great dams have been built across rivers and these are used for more than one purpose, hence they are called multipurpose undertakings. Firstly, such dams help to prevent floods, by controlling the amount of water which rushes down a river in the rainy season. This also prevents an enormous amount of damage and loss to farmers. Secondly, by storing up great quantities of water in the artificial lakes behind the dams, irrigation can be provided for many acres of land in the dry season, so that crops can be grown where none would have grown before. Thirdly, the people in the towns and cities in the neighbourhood can be certain of getting a sufficient supply of water for drinking and other purposes, even in the driest weather. Fourthly, the water stored up behind the dams is made to generate electric power by letting it run through turbines.

**6.** *(a)* निम्नलिखित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू : 2×5=10

*(i)* सूर्य

*(ii)* घोड़ा

*(iii)* महादेव

*(iv)* राति

*(v)* किरण

*(b)* निम्नलिखित अनेक शब्दक एक शब्द लिखू : 2×5=10

*(i)* जे विषय विचारलेल छोड़ि देल गेल हो

*(ii)* जे कहल नहि जा सकय

*(iii)* जे कहियो नहि भेल हो

*(iv)* जे सभ ठाम व्यापक हो

*(v)* जकर उल्लेख कयल जा सकय

*(c)* निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू : 2×5=10

*(i)* अतिवृष्टि

*(ii)* अनुराग

*(iii)* बहिरंग

*(iv)* आगम

*(v)* संकल्प

(*d*) निम्नलिखित शब्द-युग्ममे भेद स्पष्ट करू : 2×5=10

(*i*) अमर-अमार

(*ii*) कचरब-कुचरब

(*iii*) कनखा-कनखी

(*iv*) गर-गढ़

(*v*) कोस-कोष

★★★